

अयोध्या में जातीय एवं समुदाय-आधारित मंदिरों का इतिहास : धार्मिक परंपरा, सामाजिक संरचना एवं सांस्कृतिक विरासत का ऐतिहासिक अध्ययन

आनन्द कुमार दुबे

<https://doi.org/10.61410/had.v21i3.332>

सारांश :—

अयोध्या भारतीय धार्मिक एवं सांस्कृतिक इतिहास का एक अत्यंत महत्वपूर्ण नगर है, जिसका संबंध प्राचीन काल से ही धार्मिक आस्था, तीर्थ-परंपरा और रामभक्ति से रहा है। सामान्यतः अयोध्या के धार्मिक इतिहास का अध्ययन रामजन्मभूमि, प्रमुख राम मंदिरों, मठों और वैष्णव संप्रदायों के संदर्भ में किया जाता रहा है, किंतु नगर के धार्मिक भूगोल को निर्मित करने में विभिन्न जातीय, सामाजिक और क्षेत्रीय समुदायों द्वारा स्थापित मंदिरों एवं धार्मिक संस्थानों की भूमिका भी महत्वपूर्ण रही है। प्रस्तुत शोध-पत्र में इन्हीं मंदिरों को केंद्र में रखकर अयोध्या के सामाजिक एवं धार्मिक इतिहास का अध्ययन किया गया है।

इस शोध में “जातीय मंदिर” से आशय ऐसे मंदिरों एवं धार्मिक संस्थानों से है, जिनका निर्माण, संरक्षण, प्रबंधन या धार्मिक-सामुदायिक संबंध किसी विशिष्ट जातीय, सामाजिक अथवा क्षेत्रीय समुदाय से रहा है। इन मंदिरों को केवल संकीर्ण जातीय संस्थानों के रूप में देखना उचित नहीं होगा, क्योंकि समय के साथ अनेक मंदिर व्यापक धार्मिक जीवन का हिस्सा बन गए। इनका अध्ययन अयोध्या में सामाजिक गतिशीलता, प्रवास, तीर्थयात्रा, सामुदायिक संगठन और सांस्कृतिक आदान-प्रदान की प्रक्रियाओं को समझने में सहायक है।

अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि अयोध्या में मंदिरों का विकास केवल राजकीय संरक्षण अथवा धार्मिक संप्रदायों तक सीमित नहीं रहा। विभिन्न समुदायों ने अपनी धार्मिक आस्था और सांस्कृतिक पहचान को बनाए रखने के लिए मंदिरों, धर्मशालाओं, मठों और आश्रमों की स्थापना की। इन संस्थानों ने पूजा-पद्धति के संरक्षण के साथ-साथ सामाजिक एकजुटता, धार्मिक शिक्षा, दान, अन्नक्षेत्र, तीर्थयात्री सेवा और सांस्कृतिक परंपराओं के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

यह शोध ऐतिहासिक, समाजशास्त्रीय और सांस्कृतिक दृष्टिकोण के समन्वय से अयोध्या के जातीय मंदिरों के विकास का अध्ययन करता है तथा यह तर्क प्रस्तुत करता है कि इन मंदिरों का इतिहास अयोध्या की बहुलतावादी धार्मिक संस्कृति और सामाजिक संरचना को समझने के लिए महत्वपूर्ण स्रोत है।

मुख्य शब्द: अयोध्या, जातीय मंदिर, सामुदायिक मंदिर, धार्मिक इतिहास, सामाजिक संरचना, रामभक्ति, तीर्थ, मठ, सांस्कृतिक विरासत।

प्रस्तावना

भारतीय समाज में मंदिर केवल धार्मिक उपासना के स्थल नहीं रहे हैं। प्राचीन और मध्यकालीन भारत में मंदिरों ने सामाजिक संगठन, आर्थिक गतिविधियों, शिक्षा, कला, संगीत, साहित्य

- सहायक आचार्य, इतिहास विभाग, महर्षि महेश योगी रामायण विश्वविद्यालय अयोध्या, उत्तर प्रदेश।

और सांस्कृतिक संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। मंदिर किसी समुदाय की धार्मिक आस्था के केंद्र होने के साथ-साथ उसकी सामाजिक पहचान और सामूहिक स्मृति के भी महत्वपूर्ण संस्थान रहे हैं।

अयोध्या का धार्मिक इतिहास इस दृष्टि से विशेष महत्व रखता है। यह नगर भारतीय धार्मिक परंपरा में भगवान राम की जन्मभूमि के रूप में प्रतिष्ठित है और सदियों से तीर्थयात्रियों को आकर्षित करता रहा है। अयोध्या की धार्मिक संस्कृति में वैष्णव, रामानंदी, साधु-संत, मठ, अखाड़े और विभिन्न क्षेत्रीय धार्मिक परंपराओं का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

अयोध्या के विकास के साथ-साथ यहाँ विभिन्न सामाजिक और क्षेत्रीय समुदायों का आगमन हुआ। इन समुदायों ने अपनी धार्मिक आवश्यकताओं के अनुरूप मंदिरों एवं धार्मिक संस्थानों का निर्माण कराया। कुछ मंदिर विशिष्ट जातीय समुदायों की धार्मिक पहचान से जुड़े रहे, जबकि कुछ मंदिरों का संबंध क्षेत्रीय अथवा पेशागत समुदायों से रहा।

यहाँ “जातीय मंदिर” शब्द का प्रयोग अत्यंत सावधानी के साथ किया जाना चाहिए। इसका अर्थ यह नहीं है कि मंदिर केवल एक जाति के लोगों के लिए थे या वहाँ अन्य समुदायों का प्रवेश निषिद्ध था। इसके बजाय, यह उन संस्थानों की ओर संकेत करता है जिनकी स्थापना या संरक्षण में किसी विशिष्ट सामाजिक समूह की प्रमुख भूमिका रही।

2. शोध की समस्या

अयोध्या पर उपलब्ध अधिकांश ऐतिहासिक अध्ययन नगर की प्राचीनता, रामायण परंपरा, प्रमुख मंदिरों और वैष्णव धार्मिक संस्थानों पर केंद्रित हैं। छोटे और समुदाय-आधारित मंदिरों का व्यवस्थित अध्ययन अभी भी अपेक्षाकृत कम हुआ है।

इस शोध की प्रमुख समस्या यह है कि अयोध्या की सामाजिक संरचना और धार्मिक संस्कृति में जातीय एवं समुदाय-आधारित मंदिरों की वास्तविक भूमिका क्या रही?

यह प्रश्न इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि इन मंदिरों के अध्ययन से निम्नलिखित विषयों को समझा जा सकता है :

- समुदायों का अयोध्या में आगमन
- धार्मिक संस्थानों का विकास
- जातीय एवं सामाजिक पहचान
- प्रवास और बसावट
- तीर्थयात्रा का विस्तार
- स्थानीय अर्थव्यवस्था
- सांस्कृतिक आदान-प्रदान

3. शोध के उद्देश्य

1. अयोध्या में जातीय एवं समुदाय-आधारित मंदिरों के विकास का ऐतिहासिक अध्ययन करना।
2. मंदिरों की स्थापना की सामाजिक और धार्मिक पृष्ठभूमि का विश्लेषण करना।

3. विभिन्न समुदायों के अयोध्या के धार्मिक इतिहास में योगदान को समझना।
4. मंदिरों और सामुदायिक पहचान के संबंध का अध्ययन करना।
5. इन मंदिरों की सामाजिक एवं सांस्कृतिक भूमिका का विश्लेषण करना।
6. जातीय मंदिरों और तीर्थ-पर्यटन के संबंध को समझना।
7. आधुनिक समय में इन मंदिरों की बदलती भूमिका का अध्ययन करना।
8. अयोध्या की सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण में इन मंदिरों के महत्व को रेखांकित करना।

4. शोध पद्धति

यह शोध मुख्यतः ऐतिहासिक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति पर आधारित है। इसमें निम्नलिखित स्रोतों को आधार बनाया जाना प्रस्तावित है :-

प्राथमिक स्रोत

- मंदिर अभिलेख
- दानपत्र
- शिलालेख
- मंदिर वंशावली
- स्थानीय परंपराएँ
- मौखिक इतिहास
- महंत एवं पुजारियों के साक्षात्कार
- स्थानीय निवासियों के साक्षात्कार
- क्षेत्रीय सर्वेक्षण
- मंदिर स्थापत्य

द्वितीयक स्रोत

- रामायण साहित्य
- पुराण
- ऐतिहासिक ग्रंथ
- यात्रा-वृत्तांत
- गजेटियर
- पुरातात्विक रिपोर्ट
- शोध-पत्र
- पुस्तकें

इस अध्ययन में Historical Method, Oral History, Field Survey vkSj Socio & Cultural Analysis का प्रयोग किया गया है।

5. अयोध्या में मंदिर परंपरा का ऐतिहासिक विकास



अयोध्या की धार्मिक परंपरा का इतिहास अत्यंत प्राचीन है। वाल्मीकि रामायण में अयोध्या को कोशल की राजधानी के रूप में प्रस्तुत किया गया है। बाद के धार्मिक साहित्य में भी अयोध्या का उल्लेख एक महत्वपूर्ण तीर्थ के रूप में मिलता है।

मध्यकाल में अयोध्या के धार्मिक महत्व का पुनर्विकास हुआ। वैष्णव और रामभक्ति परंपराओं के विस्तार ने नगर में अनेक मठों और धार्मिक संस्थानों के विकास को प्रभावित किया।

अयोध्या के धार्मिक स्वरूप में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन यह था कि यहाँ केवल स्थानीय धार्मिक संस्थान ही नहीं, बल्कि देश के विभिन्न क्षेत्रों से आने वाले धार्मिक समूहों ने भी अपने केंद्र स्थापित किए। इस प्रक्रिया ने नगर को एक बहुस्तरीय धार्मिक नगर में परिवर्तित किया।

6. जातीय एवं समुदाय-आधारित मंदिरों का विकास

अयोध्या में समुदाय-आधारित मंदिरों के विकास को तीन प्रमुख ऐतिहासिक प्रक्रियाओं से जोड़कर देखा जा सकता है –

- (1) तीर्थयात्रा – देश के विभिन्न भागों से आने वाले तीर्थयात्रियों ने अयोध्या में धार्मिक संस्थानों का निर्माण कराया।
- (2) प्रवास और बसावट – कुछ धार्मिक एवं सामाजिक समूहों ने अयोध्या में स्थायी निवास स्थापित किया।
- (3) सामुदायिक संगठन – समुदायों ने अपनी धार्मिक परंपराओं को संरक्षित करने के लिए मंदिर और धर्मशालाएँ स्थापित कीं।

इस प्रकार मंदिर निर्माण धार्मिक आस्था के साथ-साथ सामाजिक संगठन की प्रक्रिया भी था।

7. अयोध्या के प्रमुख समुदाय-आधारित धार्मिक केंद्र रू एक अध्ययन

यहाँ यह विशेष रूप से स्पष्ट करना आवश्यक है कि किसी मंदिर को “जातीय मंदिर” घोषित करने से पहले उसके अभिलेखीय और क्षेत्रीय प्रमाणों की पुष्टि आवश्यक है। इसलिए नीचे दिए गए समूहों को शोध की संभावित श्रेणियों के रूप में देखा जाना चाहिए, न कि प्रत्येक मंदिर के जातीय स्वरूप का अंतिम प्रमाण माना जाना चाहिए।

1. रामानंदी एवं वैष्णव धार्मिक संस्थान

अयोध्या के धार्मिक इतिहास में रामानंदी परंपरा का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। इस परंपरा से जुड़े मठों और अखाड़ों ने अयोध्या के धार्मिक जीवन को प्रभावित किया।

इन संस्थानों में साधु-संतों की परंपरा, धार्मिक शिक्षा, रामभक्ति और तीर्थयात्रियों की सेवा प्रमुख गतिविधियाँ रही हैं।

इन संस्थानों को सीधे “जातीय मंदिर” कहना उचित नहीं होगा, क्योंकि इनका आधार मुख्यतः धार्मिक संप्रदाय था। फिर भी इनके सामाजिक संगठन और अनुयायी समूहों के अध्ययन से अयोध्या की सामाजिक संरचना को समझने में सहायता मिलती है।

2. व्यापारी एवं वैश्य समुदाय से जुड़े धार्मिक संस्थान

उत्तर भारत में व्यापारी और वैश्य समुदायों ने अनेक तीर्थ नगरों में मंदिर, धर्मशाला और दान संस्थान स्थापित किए। अयोध्या में भी व्यापारिक समुदायों के धार्मिक योगदान का अध्ययन महत्वपूर्ण है।

इन समुदायों द्वारा निर्मित संस्थानों में :

- मंदिर निर्माण
- धर्मशाला
- अन्नदान
- तीर्थयात्री सेवा
- धार्मिक उत्सव

जैसी गतिविधियाँ होती रही होंगी। इन संस्थानों का अध्ययन स्थानीय अर्थव्यवस्था और धार्मिक पर्यटन के इतिहास से भी जोड़ा जा सकता है।

3. कायस्थ समुदाय की धार्मिक उपस्थिति

उत्तर भारत के नगरों में कायस्थ समुदाय की ऐतिहासिक उपस्थिति रही है। प्रशासनिक और लेखकीय सेवाओं से जुड़े इस समुदाय ने विभिन्न स्थानों पर धार्मिक संस्थानों को संरक्षण दिया।

अयोध्या में कायस्थ समुदाय की धार्मिक गतिविधियों का अध्ययन मंदिरों, दानपत्रों और स्थानीय परंपराओं के आधार पर किया जा सकता है। इस क्षेत्र में मौखिक इतिहास और अभिलेखीय शोध विशेष रूप से आवश्यक है।

4. ब्राह्मण समुदाय एवं धार्मिक संस्थान

अयोध्या में ब्राह्मण समुदाय की भूमिका धार्मिक अनुष्ठानों, पूजा, संस्कृत शिक्षा और धार्मिक संस्थानों के संचालन में महत्वपूर्ण रही है। हालाँकि सभी ब्राह्मण-संबंधित मंदिरों को जातीय मंदिर कहना उचित नहीं है, लेकिन कुछ धार्मिक संस्थानों के संरक्षण और प्रबंधन में विशिष्ट ब्राह्मण परिवारों या समूहों की भूमिका रही हो सकती है। इनका अध्ययन मंदिरों की वंशावली और स्थानीय अभिलेखों के माध्यम से किया जाना चाहिए।

5. क्षेत्रीय समुदायों के मंदिर

अयोध्या में देश के विभिन्न क्षेत्रों से आने वाले तीर्थयात्रियों और धार्मिक समुदायों के कारण क्षेत्रीय धार्मिक संस्थान भी विकसित हुए।

इनमें :—

- दक्षिण भारतीय परंपरा
- बंगाल एवं पूर्वी भारत की वैष्णव परंपराएँ

- राजस्थान एवं पश्चिमी भारत के धार्मिक समुदाय
 - गुजरात एवं महाराष्ट्र से जुड़े धार्मिक समूह
- जैसे समुदायों की उपस्थिति का अध्ययन किया जा सकता है।

यह प्रक्रिया अयोध्या को एक Pan & Indian Sacred Centre के रूप में समझने में सहायक है।

8. जातीय मंदिर और सामाजिक पहचान

जातीय एवं समुदाय-आधारित मंदिरों ने सामाजिक पहचान को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

मंदिरों में आयोजित :-

- धार्मिक उत्सव
- सामुदायिक भोज
- पूजा
- कथा
- भजन-कीर्तन
- संस्कार

ने समुदाय के सदस्यों को एक साथ आने का अवसर प्रदान किया। इस प्रकार मंदिर सामाजिक संगठन का माध्यम बने।

9. जातीय मंदिर और सांस्कृतिक स्मृति

मंदिरों में संरक्षित :-

- मूर्तियाँ
 - अभिलेख
 - वंशावलियाँ
 - धार्मिक ग्रंथ
 - दान परंपराएँ
 - मौखिक कथाएँ
-

सामुदायिक इतिहास के महत्वपूर्ण स्रोत हैं।

इन स्रोतों के माध्यम से यह पता लगाया जा सकता है कि कोई समुदाय कब अयोध्या आया, उसने मंदिर कब बनाया और किस प्रकार उसकी धार्मिक परंपरा विकसित हुई।

10. जातीय मंदिर और अयोध्या की अर्थव्यवस्था

अयोध्या के मंदिरों ने स्थानीय अर्थव्यवस्था को प्रभावित किया है।

मंदिरों के कारण :-

- तीर्थयात्रियों का आगमन
- आवास व्यवस्था
- भोजन व्यवस्था
- धार्मिक सामग्री का व्यापार
- फूल-माला व्यवसाय
- परिवहन
- स्थानीय रोजगार

जैसी आर्थिक गतिविधियों का विकास हुआ।

इस प्रकार समुदाय-आधारित मंदिरों का अध्ययन धार्मिक अर्थव्यवस्था के इतिहास से भी जोड़ा जा सकता है।

11. आधुनिक काल में जातीय मंदिरों की भूमिका

आधुनिक समय में अयोध्या का धार्मिक महत्व तेजी से बढ़ा है। धार्मिक पर्यटन के विस्तार और बुनियादी सुविधाओं के विकास ने मंदिरों की भूमिका को भी प्रभावित किया है।

आज जातीय एवं समुदाय-आधारित मंदिर :

- धार्मिक पर्यटन
- सामुदायिक पहचान
- सांस्कृतिक विरासत
- धार्मिक उत्सव
- सामाजिक सेवा

के महत्वपूर्ण केंद्र बन सकते हैं।

हालाँकि पर्यटन के विस्तार के साथ इन मंदिरों के मूल स्वरूप और ऐतिहासिक प्रामाणिकता के संरक्षण की चुनौती भी उत्पन्न हुई है।

12. शोध-अंतर (Research Gap)

अयोध्या के धार्मिक इतिहास पर व्यापक अध्ययन उपलब्ध होने के बावजूद जातीय एवं समुदाय-आधारित मंदिरों पर स्वतंत्र और व्यवस्थित शोध की आवश्यकता है।

विशेष रूप से निम्नलिखित क्षेत्रों में शोध-अंतर दिखाई देता है :

1. छोटे मंदिरों का व्यवस्थित दस्तावेजीकरण नहीं हुआ है।
2. मंदिरों के संस्थापकों की प्रमाणिक जानकारी सीमित है।
3. जातीय मंदिरों का GIS आधारित मानचित्रण नहीं हुआ है।
4. मंदिरों और प्रवासी समुदायों के संबंध का पर्याप्त अध्ययन नहीं हुआ।
5. मौखिक इतिहास का पर्याप्त उपयोग नहीं किया गया।
6. मंदिरों के सामाजिक और आर्थिक योगदान का तुलनात्मक अध्ययन सीमित है।

इस शोध का उद्देश्य इन शोध-अंतरालों को कम करना है।

13. निष्कर्ष

अयोध्या के जातीय एवं समुदाय-आधारित मंदिरों का इतिहास नगर की व्यापक धार्मिक और सामाजिक संरचना का महत्वपूर्ण हिस्सा है। इन मंदिरों का विकास केवल धार्मिक आस्था का परिणाम नहीं था, बल्कि तीर्थयात्रा, प्रवास, सामुदायिक संगठन और सांस्कृतिक पहचान की जटिल ऐतिहासिक प्रक्रियाओं से भी जुड़ा हुआ था।

इन मंदिरों ने विभिन्न समुदायों को अपनी धार्मिक और सांस्कृतिक परंपराओं को संरक्षित करने का अवसर प्रदान किया। साथ ही, उन्होंने अयोध्या के धार्मिक भूगोल को अधिक विविध और बहुआयामी बनाया।

यह अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि अयोध्या का इतिहास केवल बड़े और प्रसिद्ध मंदिरों के इतिहास तक सीमित नहीं है। छोटे मंदिर, मठ, धर्मशालाएँ और समुदाय-आधारित धार्मिक संस्थान भी नगर के इतिहास के महत्वपूर्ण घटक हैं।

भविष्य के शोध में अयोध्या के प्रत्येक समुदाय-आधारित मंदिर का स्थल सर्वेक्षण, GPS/GIS मैपिंग, अभिलेखीय अध्ययन, मंदिर वंशावली, मौखिक इतिहास और फोटोग्राफिक दस्तावेजीकरण किया जाना चाहिए। इससे अयोध्या की धार्मिक विरासत का एक व्यापक डिजिटल डेटाबेस तैयार किया जा सकता है।

अंततः, जातीय मंदिरों का अध्ययन भारतीय समाज की विविधता और धार्मिक संस्थानों के सामाजिक चरित्र को समझने का महत्वपूर्ण माध्यम है। यह अध्ययन अयोध्या को केवल एक धार्मिक नगर के रूप में नहीं, बल्कि विभिन्न सामाजिक समूहों, धार्मिक परंपराओं और सांस्कृतिक स्मृतियों के सह-अस्तित्व से निर्मित एक जीवंत ऐतिहासिक नगर के रूप में देखने की दिशा प्रदान करता है।

संदर्भ सूची (Referencs)

प्राथमिक एवं प्राचीन स्रोत

- 1- वाल्मीकि कृ रामायण ।
- 2- तुलसीदास कृ रामचरितमानस ।
- 3- स्कन्द पुराण ।
- 4- विष्णु पुराण ।
- 5- पद्म पुराण ।
- 6- अथर्ववेद एवं अन्य वैदिक साहित्य ।
- 7- आधुनिक एवं ऐतिहासिक अध्ययन
- 8- Cunningham, Alexander. [Archaeological Survey Reports](#).
- 9- Cunningham, Alexander. [Archaeological Survey Reports](#) तथा संबंधित औपनिवेशिक गजेटियर साहित्य ।
- 10- Gazetteers of the United Provinces.
- 11- [District Gazetteer: Faizabad](#).
- 12- P. V. Kane — [History of Dharmasastra](#).
- 13- R. C. Majumdar (ed.) — [The History and Culture of the Indian People](#).
- 14- A. L. Basham — [The Wonder That Was India](#).
- 15- Romila Thapar — [Cultural Pasts](#).
- 16- Diana L. Eck — [India: A Sacred Geography](#).
- 17- Hans Bakker — [Ayodhya](#).
- 18- Hans Bakker — [Ayodhya: The History of a Sacred Place](#).
- 19- स्थानीय मंदिर अभिलेख एवं वंशावली ।
- 20- स्थानीय मौखिक परंपराएँ एवं साक्षात्कार ।
- 21- अयोध्या क्षेत्र से संबंधित पुरातात्विक एवं ऐतिहासिक सर्वेक्षण रिपोर्ट ।